अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2024) दिनांक : 24.08.2024

समय सीमा : 3 घंटा चतुर्थ वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

लघु दण्डक–30

प्र. 1 कोई चार प्रश्न लिखें– 24

(क) पर्याप्ति द्वार।
(ख) स्थिति द्वार-ज्योतिष देवियों की स्थिति।
(ग) च्यवन द्वार।
(घ) ज्ञान द्वार।
(ड़) दर्शन द्वार।
(च) छब्बीसवां-योग द्वार।

प्र. 2 कोई दो द्वार लिखें– 6

(क) आहार द्वार।
(ख) पांच स्थावर में संस्थान का विवरण।
(ग) नारकी की अवगाहना।

पांच ज्ञान–30

प्र. 3 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखें– 24

(क) श्रुत निश्रित मतिज्ञान के चार प्रकारों को स्पष्ट करें।
(ख) अवग्रह आदि के दो दृष्टांतों को समझाएं।
(ग) अवधि ज्ञान के विषय को विवेचित करें।
(घ) प्रतिपाति व अप्रतिपाति अवधिज्ञान के बारे में लिखें।
(ड़) संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत के तीन प्रकारों का वर्णन करें।

प्र. 4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) अनक्षर श्रुत से क्या तात्पर्य है?
(ख) अनेक सिद्ध किसे कहते हैं?
(ग) सिद्ध केवल ज्ञान के दो प्रकार कौन-से हैं?
(घ) औत्पत्तिकी बुद्धि किसे कहते हैं?
(ड़) अवधि ज्ञान के द्वारा ज्योतिषी देव की देखने की शक्ति कितनी है?
(च) मनःपर्यव ज्ञान के विषय कितने हैं? नाम लिखें।
(छ) गव्यूत से आप क्या समझते हैं?
(ज) मतिज्ञान यदि मूक होता है तो श्रुत ज्ञान क्या होगा?

गीतिका (गुणस्थान दिग्दर्शन)–10

प्र. 5 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) मोह कर्म तथा चार अघाति कर्म की सत्ता कौन-से गुणस्थान तक रहती है?

(ख) कौन से सूत्र में ईर्यापथिक बन्ध की स्थिति दो समय बताई गई है?

(ग) गुणस्थानों में शाश्वत और अशाश्वत कितने हैं?

प्र. 6 कोई दो पद्य को अर्थ सहित लिखें– 8

(क) कषाय नवमां.....देखो रे।

(ख) मोह नो उदै.....तामा रे।

(ग) ज्ञानावरणी.....बंधायो रे।

(घ) मोह कर्म.....नांही रे।

पूर्व कंठस्थ ज्ञान–30

प्र. 7 निम्न सभी प्रश्नों के उत्तर दें– 30

(क) पच्चीस बोल–अंतिम आठ गुणस्थान अथवा संवर के अंतिम आठ भेद? 3

(ख) चतुर्भंगी–सोलहवां अथवा दसवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–आठवां अथवा बीसवां बोल। 3

(घ) तत्त्वचर्चा–अधर्म पर चर्चा अथवा कर्म पर चर्चा। 3

(ड़) कर्म प्रकृति–दर्शनावरणीय कर्म भोगने के हेतु अथवा दर्शन मोह की प्रकृतियों का कार्य एवं स्थिति। 4

(च) जैन तत्त्व प्रवेश–भेद द्वार अथवा आत्म द्वार। 3

(छ) बावन बोल–आश्रव के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा? अथवा बाईस परीषह किस-किस कर्म के उदय से? 4

(ज) इक्कीस द्वार–वचन योगी अथवा चक्षुदर्शनी। 4

(झ) जैन तत्त्व प्रवेश–(द्वितीय व तृतीय खण्ड) श्रावक-गुणद्वार अथवा उपांग के बारह भेद के नाम लिखें। 3